अजीब प्राणी

वाल्टर रोथ्सचाइल्ड

और उनके म्यूज़ियम की कहानी

लिटा जज

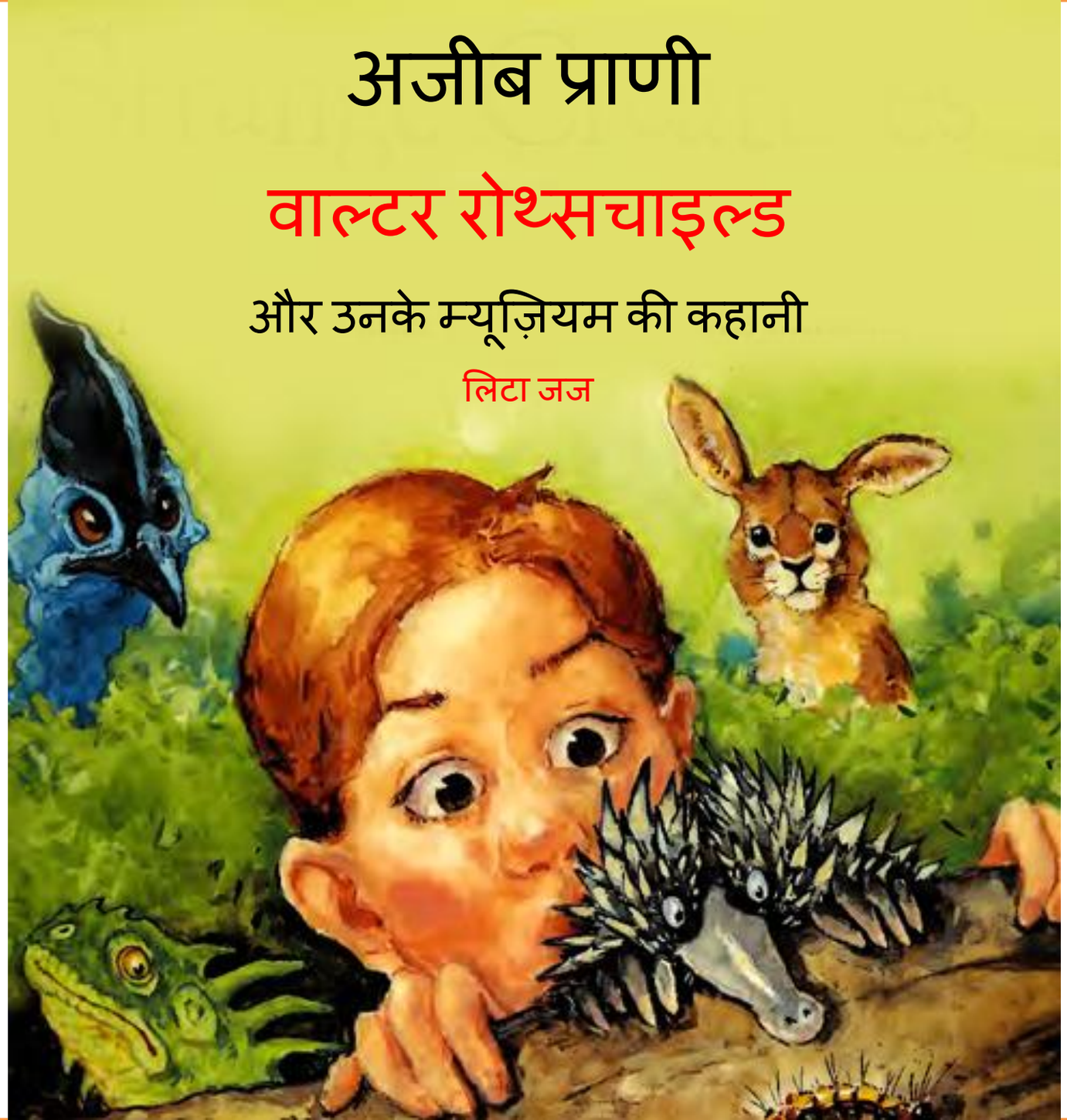

वाल्टर रोथ्सचाइल्ड एक बहुत ही असामान्य लड़का था. वह बैंकरों के परिवार में पैदा हुआ था और वो दुनिया का सबसे अमीर लड़का था. पर उससे वो असाधारण और असामान्य नहीं बना. वाल्टर इतना शर्मीला था कि वो बड़ी मुश्किल से ही कुछ बोलता था. उसके कोई दोस्त नहीं थे, लेकिन वो उस हर प्राणी से प्यार करता था जो रेंगता, चलता या उड़ता था.

सात साल की उम्र में, वाल्टर ने अपनी पहली सर्कस परेड देखी. उसे देखकर वो इतना उत्साहित हुआ कि उसने अपने माता-पिता से कहा: "मैं दुनिया भर के जानवरों को इकट्ठा करूंगा और एक संग्रहालय बनाऊंगा!" जल्द ही, वाल्टर के पास अपने पहले विदेशी जीव थे: कंगारू, वॉलबी और कीवी. उसके बाद उसका संग्रह बढ़ता गया और बढ़ता गया. अंत में जानवर, रोथ्सचाइल्ड की समस्त एस्टेट और तालाब पर फ़ैल गए. जब एक विशालकाय छिपकली ने माँ के लिली फूल चबाए तो फिर माँ उस पर चिल्लाईं. लॉर्ड रोथ्सचाइल्ड चाहते थे कि उनका बेटा अंततः पारिवार का व्यवसाय संभाले. लेकिन वाल्टर ने कभी भी अपना सपना नहीं छोड़ा.

अजीब प्राणी, एक बेहद शर्मीले लड़के की कहानी है जिसने अपना शौक और जुनून तो जिया ही पर अंत में वो एक शानदार वैज्ञानिक भी बना, जिसके शोध ने दुनिया में विविधता की समझ को हमेशा के लिए बदला.

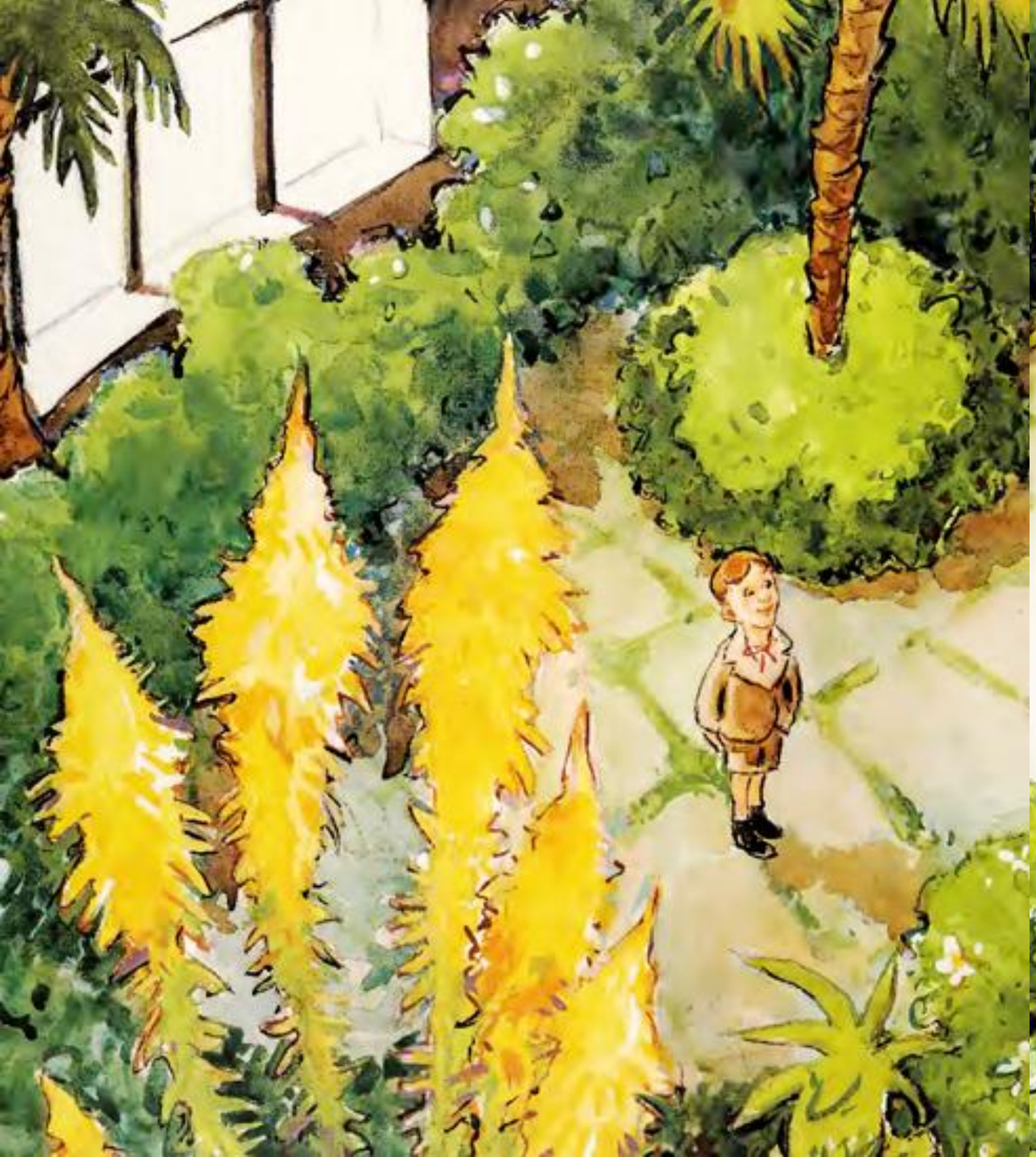

वाल्टर, लेडी एम्मा और लॉर्ड नाथन रोथ्सचाइल्ड का बेटा था. वो एक बहुत ही असामान्य लड़का था. वो 1868 में पैदा हुआ और लंदन के बाहर एक बड़ी एस्टेट पर बड़ा हुआ. उसका घर एक महल जितना बड़ा था और उसमें कई एकड़ के बाग़-बगीचे थे. वो चाहता तो पूरी दुनिया को अपने घर में ही खोज सकता था. कैक्टस और विदेशी ऑर्किड उगाने के लिए वहां एक ग्रीनहाउस था. इंग्लैंड की महारानी के लिए जन्मदिन के फूल उगाने के लिए एक अन्य ग्रीनहाउस था. वाल्टर के पिता इंग्लैंड की रानी के प्रमुख बैंकर थे. असल में, वाल्टर के सभी रिश्तेदार बैंकर थे. वो दुनिया का सबसे अमीर लड़का था, लेकिन उसने उसे असामान्य नहीं बनाया.

वाल्टर इतना शर्मीला था कि वो बड़ी मुश्किल से ही कुछ बोलता था. उसके माता-पिता को डर था कि अन्य बच्चे उसे स्कूल में ज़रूर छेड़ेंगे. इसलिए उन्होंने उसे घर पर ही रखा जहाँ उसे एक गवर्नेस ने पढ़ाया. लेकिन वाल्टर अपना सारा समय कीड़े-मकौड़े, पक्षी और जानवर इकट्ठा करने में ही बिताता था. बगीचे में तितलियों को पकड़ते हुए उसे शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती थी. वाल्टर का कोई भी दोस्त नहीं था, लेकिन वो उस हर प्राणी से प्यार करता - जो रेंगता, फिसलता, कूदता या उड़ता था.

एक शाम उसके पिता ने गुस्से में कहा, "रोथ्सचाइल्ड परिवार के बेटे को ऐसा नहीं करना चाहिए! तुम्हें उचित व्यवहार सीखना चाहिए."

जब पिता उस पर चिल्लाए, तब वाल्टर एक घोंघे की तरह अपने खोल में घुसा गया.

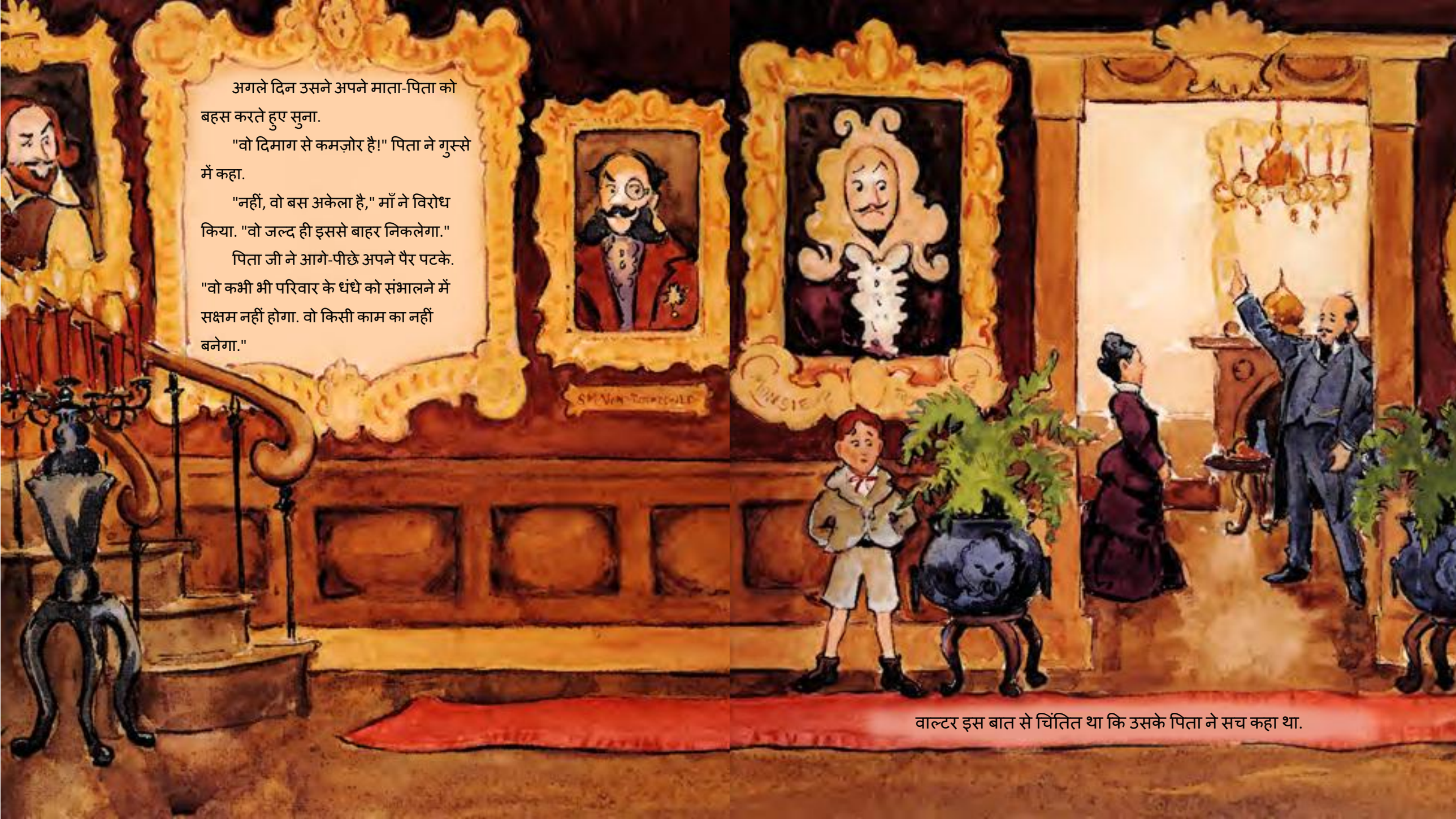

अगले दिन उसने अपने माता-पिता को बहस करते हुए सुना.

"वो दिमाग से कमज़ोर है!" पिता ने गुस्से में कहा.

"नहीं, वो बस अकेला है," माँ ने विरोध किया. "वो जल्द ही इससे बाहर निकलेगा."

पिता जी ने आगे-पीछे अपने पैर पटके. "वो कभी भी परिवार के धंधे को संभालने में सक्षम नहीं होगा. वो किसी काम का नहीं बनेगा."

वाल्टर इस बात से चिंतित था कि उसके पिता ने सच कहा था.

एक दिन गवर्नेस, वाल्टर को पिकाडिली में सर्कस परेड दिखाने के लिए ले गई. जीवन में पहली बार वाल्टर ने बंदरों, जेब्रा और ऊंटों को देखा. उन्हें देखकर वो इतना उत्तेजित और उत्साहित हुआ, कि वो अपने पैर पटकने लगा, उसके घुटने डगमगाने लगे और पहली बार उसके दिमाग में शब्द तैरने लगे.

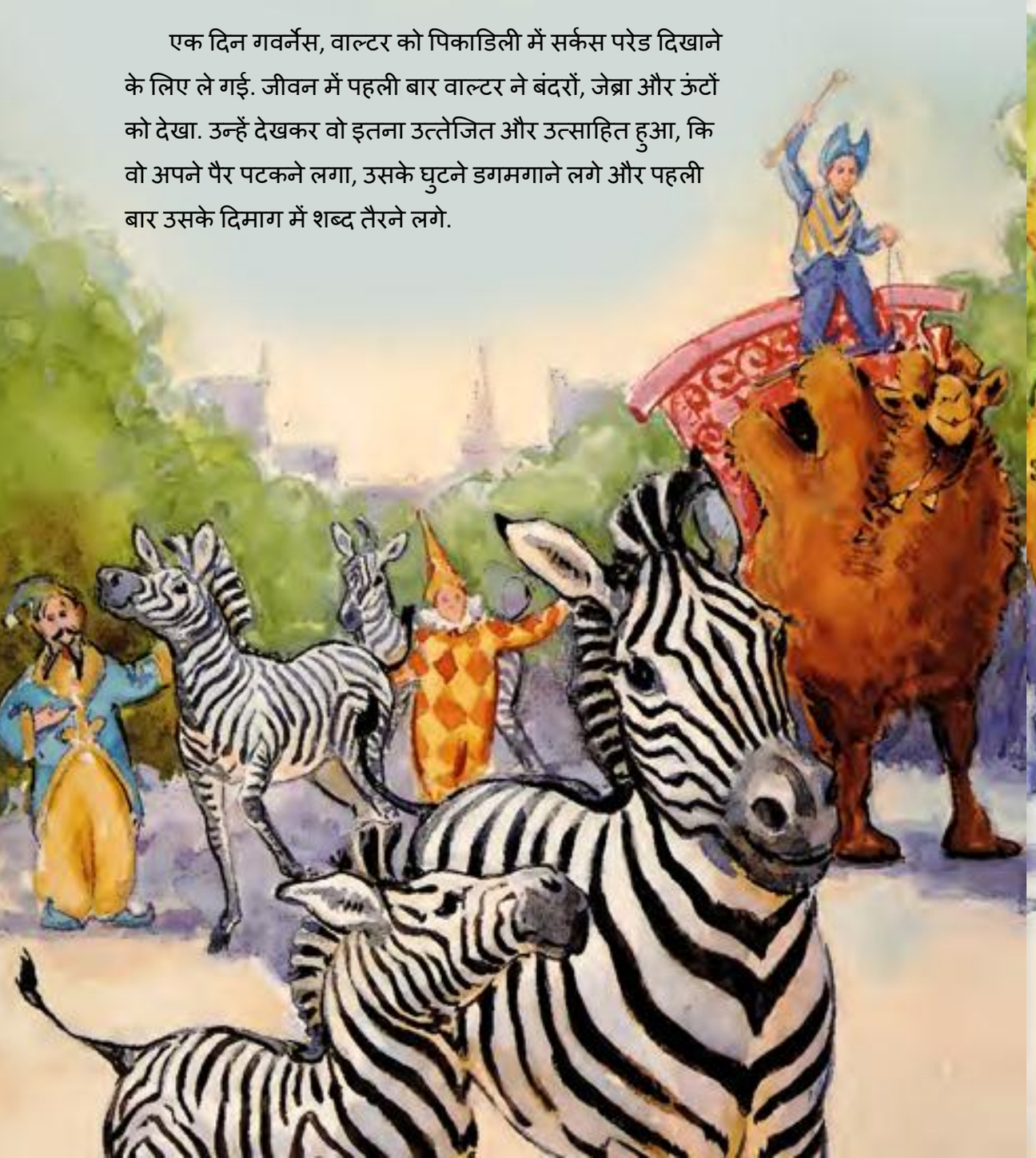

जब वो घर पहुंचा तो उसके अंदर का ज्वालामुखी फूट पड़ा, "माँ और पिताजी, मैं दुनिया भर के जानवरों को इकट्ठा करूंगा और उनका एक संग्रहालय बनाऊंगा. उसे मैं अपना संग्रहालय कहूंगा!" उसने बिना सांस रोके अपनी बात कही. इस बार पिताजी के पास वाल्टर से कहने के लिए कुछ भी नहीं था.

वाल्टर केवल सात साल का था, लेकिन उसने अपने संग्रहालय की योजना बनाना शुरू कर दी. उसका सपना था कि उसमें एक प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय की तरह जानवरों के मृत नमूने हों, लेकिन साथ में चिड़ियाघर जैसे जीवित जानवर भी हों. उसका परिवार उन खोजकर्ताओं को जानता था जिन्होंने लंदन चिड़ियाघर के लिए जानवर लाने के लिए दुनिया भर की यात्रा की थी. वाल्टर ने घोषणा की कि वो अपने पॉकेट खर्च से एक कंगारू खरीदगा.

"शायद उससे उसे अपनी शर्म पर काबू पाने में मदद मिलेगी," माँ ने निवेदन किया. आखिर में पिता उस बात पर सहमत हुए.

जल्द ही उनकी विशाल एस्टेट के मैदान में कई कंगारू मुक्त घूम रहे थे. एक गेम-कीपर की मदद से वाल्टर उनकी देखभाल करता था. जब उसने अपने इस ख़ज़ाने में एक वालाबी जोड़ी और जब कीवी के झुंड वाल्टर के पीछे-पीछे दौड़े तब उसके माता-पिता ने उन्हें अनदेखा किया.

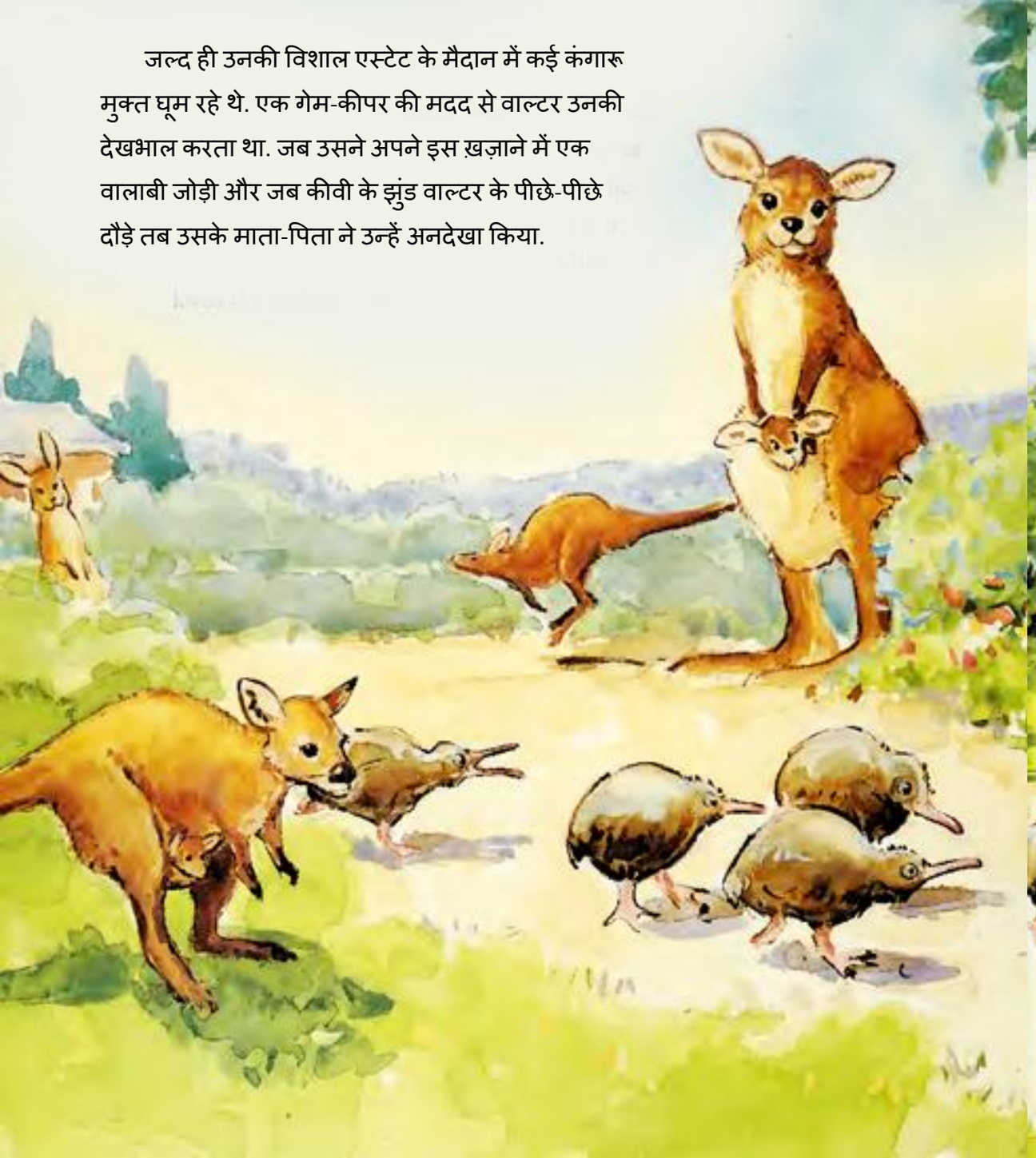

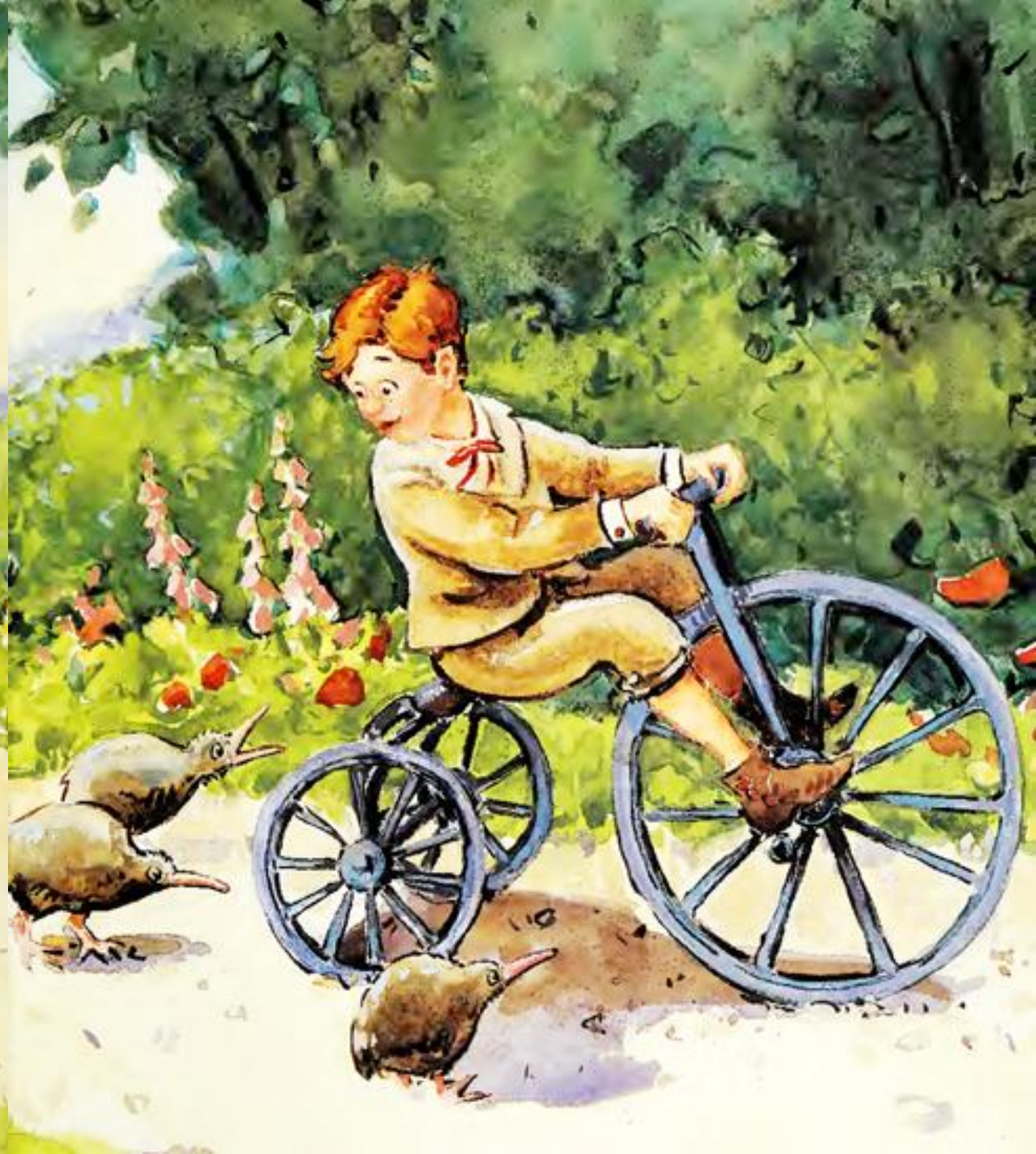

लेकिन मां को तब बहुत गुस्सा आया जब एक विशालकाय छिपकली अपने पिंजड़े से बाहर निकली और उसने माँ के सबसे प्रिय लिली फूलों को चबा डाला.

"वाल्टर!" माँ गुस्से में चिल्लाईं.

जब वाल्टर बारह वर्ष का हुआ, तो प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय ने लंदन में एक शानदार इमारत खोली. वाल्टर ने तब कल्पना की कि उसका संग्रह जो अभी बगीचे के शेड में संग्रहीत था वो किसी दिन एक अजूबे महल में प्रदर्शित होगा. फिर वाल्टर दौड़कर घर आया और अपने "बीटल्स" इकट्ठा किए. उसने उन "बीटल्स" को संग्रहालय में प्राणी विज्ञान विभाग के प्रमुख अल्बर्ट गुनथर को देने की हिम्मत जुटाई. अल्बर्ट को वो संग्रह बेहद पसंद आया. उसके बाद अल्बर्ट, वाल्टर के पहले सच्चे दोस्त और संरक्षक बने.

वाल्टर के समय में दुनिया के कई जानवर विज्ञान के लिए एकदम अज्ञात और अनजान थे. उस समय दूर स्थित जंगलों और अनछुए द्वीपों के बारे में पता लगाया जा रहा था. वाल्टर पहले से ही कीटों, पक्षियों और नए खोजे जानवरों के बारे में बहुत कुछ जानता था. उसका दिमाग एक विश्वकोश जैसा था. लेकिन वाल्टर दूर-दराज़ की अनजानी, नई प्रजातियों का वर्णन करना चाहता था. अल्बर्ट समझ गया कि वाल्टर एक असामान्य लड़का था. वाल्टर को बोलने में ज़रूर संघर्ष करना पड़ता था लेकिन वो बेहद प्रतिभाशाली था.

वाल्टर के पिता को अपने बेटे की प्रतिभा के प्रति कोई सहानभूति नहीं थी. जब वाल्टर वयस्क हुआ तो पिता ने मांग की कि वो अपना सारा समय कीड़े-मकौड़ों के साथ बिताना बंद करे, और अपने परिवार के बैंक में काम करना शुरू करे.

वाल्टर ने बड़ी अनिच्छा से अपने परिवार के बैंक में काम करना शुरू किया. अब उसे अपने सपनों को साकार कर पाना असंभव लगने लगा.

लेकिन प्राणी संग्रहालय बनाने की वाल्टर की योजना बिल्कुल धुंधली नहीं हुई. क्योंकि अब वो काम कर रहा था और कमाई कर रहा था इसलिए वो दूर-दराज़ के क्षेत्रों में जानवरों की खोज के अभियान को फंड कर सकता था. उसने दक्षिण पैसिफिक में नए खोजे द्वीपों से पक्षियों को इकट्ठा करने के लिए एक अभियान की योजना बनाई और उसके लिए खोजकर्ताओं को नियुक्त किया. पर पिता ने वाल्टर को अपनी नौकरी छोड़ने की अनुमति नहीं दी. इसलिए वाल्टर हर बार यात्रा के दौरान खोजकर्ताओं द्वारा भेजे गए टोकरों को खोलते समय दक्षिण पैसिफिक की यात्रा कल्पना जगत में ही करता था.

वाल्टर ने संरक्षित पक्षियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया. वो नए नमूनों के बीच छोटे-छोटे अंतर खोजता था जिन्हें ज्यादातर लोग कभी नोटिस नहीं करते थे. उसके बाद वो नई प्रजातियों का वर्णन लिखता था. अभियान से लाई गयीं नई प्रजातियां उस समय वैज्ञानिक समुदाय में सबसे बड़ी खबर बनीं.

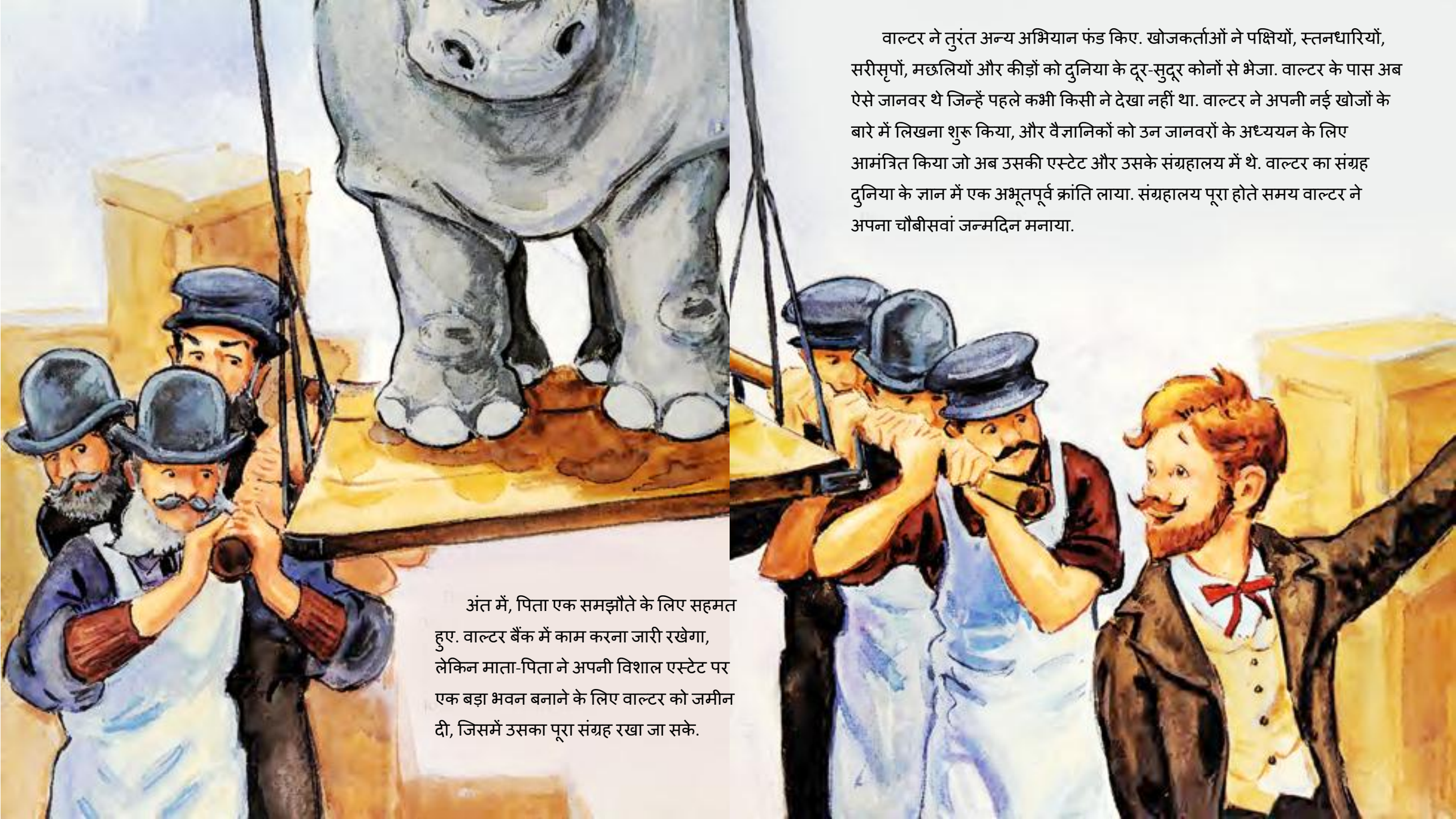

अंत में, पिता एक समझौते के लिए सहमत हुए. वाल्टर बैंक में काम करना जारी रखेगा, लेकिन माता-पिता ने अपनी विशाल एस्टेट पर एक बड़ा भवन बनाने के लिए वाल्टर को जमीन दी, जिसमें उसका पूरा संग्रह रखा जा सके.

वाल्टर ने तुरंत अन्य अभियान फंड किए. खोजकर्ताओं ने पक्षियों, स्तनधारियों, सरीसृपों, मछलियों और कीड़ों को दुनिया के दूर-सुदूर कोनों से भेजा. वाल्टर के पास अब ऐसे जानवर थे जिन्हें पहले कभी किसी ने देखा नहीं था. वाल्टर ने अपनी नई खोजों के बारे में लिखना शुरू किया, और वैज्ञानिकों को उन जानवरों के अध्ययन के लिए आमंत्रित किया जो अब उसकी एस्टेट और उसके संग्रहालय में थे. वाल्टर का संग्रह दुनिया के ज्ञान में एक अभूतपूर्व क्रांति लाया. संग्रहालय पूरा होते समय वाल्टर ने अपना चौबीसवां जन्मदिन मनाया.

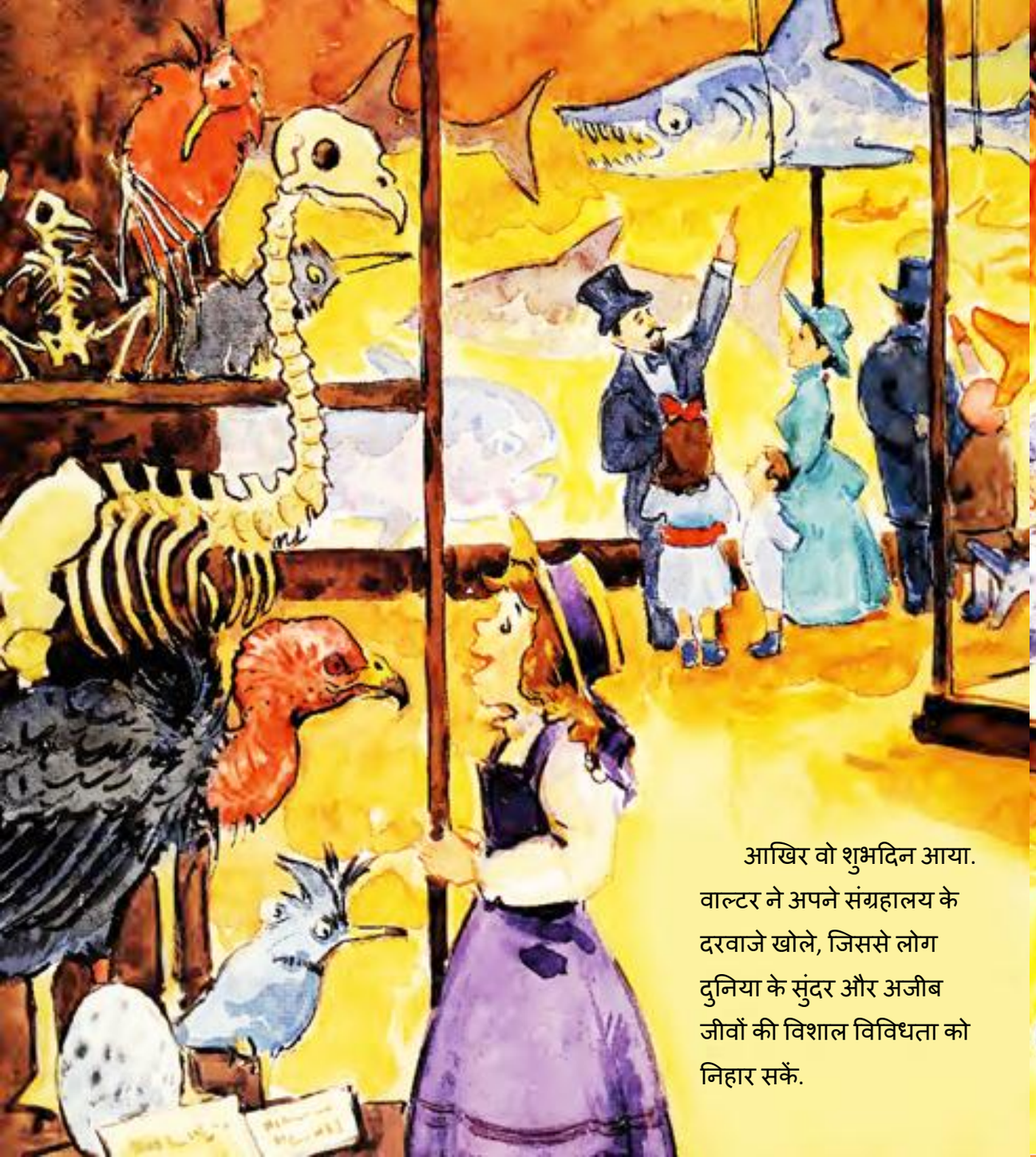

आखिर वो शुभदिन आया. वाल्टर ने अपने संग्रहालय के दरवाजे खोले, जिससे लोग दुनिया के सुंदर और अजीब जीवों की विशाल विविधता को निहार सकें.

कांगो से ओकापी, कोलम्बिया से कैप्यार्बास, और मारबौ स्टॉर्क देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. उन्होंने विशाल कैसोवरी, कंटीले चींटीखोर, और यहां तक कि प्रागैतिहासिक जानवरों के जीवाश्म भी देखे.

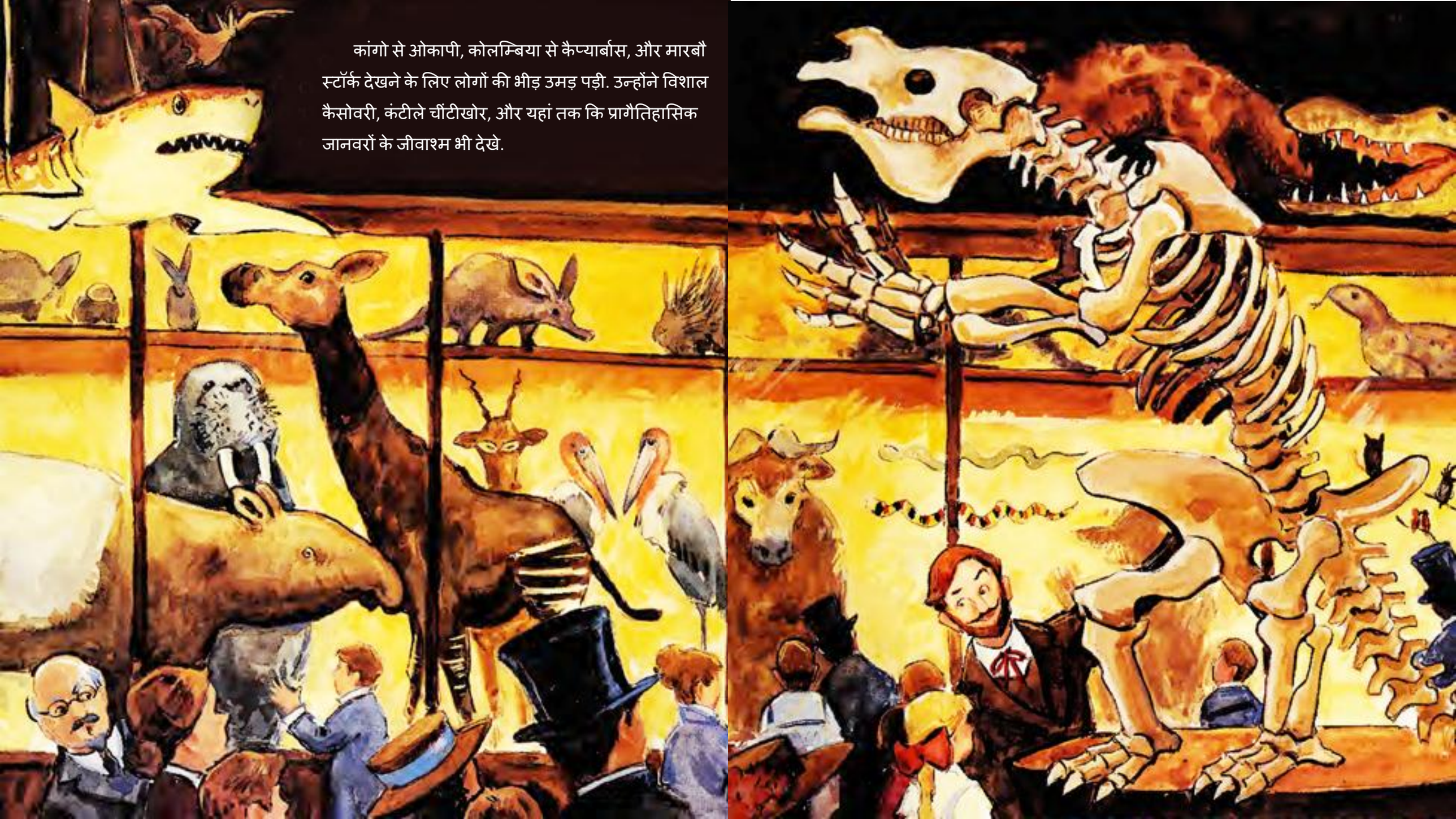

वाल्टर एक अकेले व्यक्ति ने तब तक का सबसे बड़ा प्राणी संग्रह इकट्ठा किया. विज्ञान के क्षेत्र में उसके योगदान के लिए वाल्टर को दुनिया भर में सम्मानित किया गया. दो आजीवन सहायकों की मदद से, वाल्टर ने बारह सौ किताबें और वैज्ञानिक निबंध लिखे, और पांच हजार नई प्रजातियों को नाम दिए. “रोथ्सचाइल्ड” नाम वाले जानवरों में तितलियां, मछली, एक मक्खी, एक मिलिपीड, एक छिपकली, एक साही, एक वालाबी, एक बर्ड ऑफ़ पैराडाइस और यहां तक कि एक जिराफ भी शामिल हैं.

वाल्टर कभी भी एक सफल बैंकर नहीं बना. वो अपने पूरे जीवन भर शर्मसार रहा और उसने शादी नहीं की. लेकिन वो विशाल कछुओं, कैसोवरी और अन्य जानवरों से हमेशा घिरा रहता था जो उसकी विशाल एस्टेट पर रहते थे.

अंत में वाल्टर को लॉर्ड रोथ्सचाइल्ड की उपाधि मिली. जो भी संग्रहालय में आए उनके साथ वाल्टर बड़ी उदारता से पेश आया.

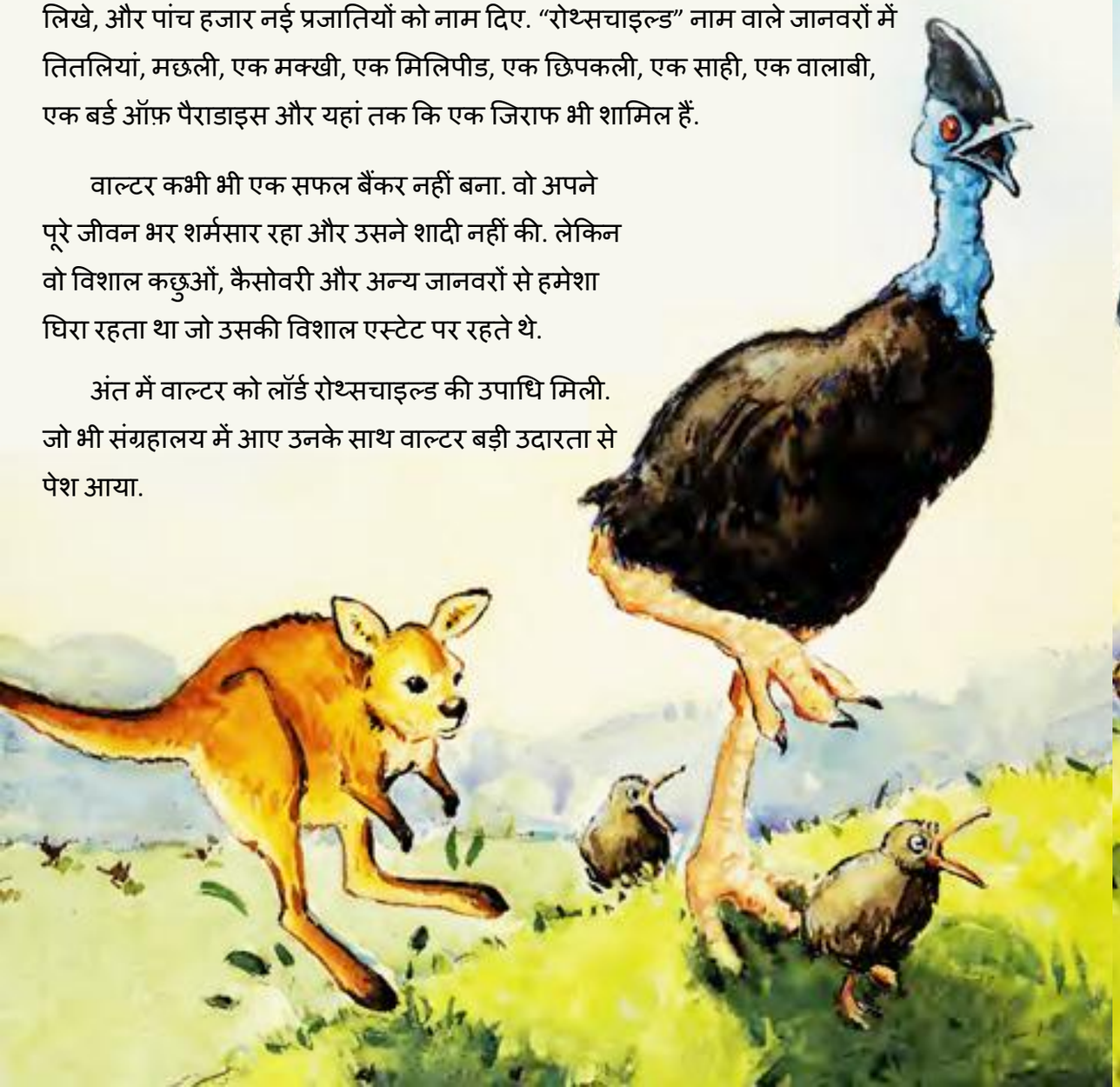

लेकिन उसका सबसे उदार कार्य था - वैज्ञानिकों की भावी पीढ़ियों को अपना संग्रह उपलब्ध कराना. उसके शोध ने दुनिया में विविधता की हमारी समझ को हमेशा के लिए बदल डाला.